की रचना की है।

(3) रीतिसिद्ध काव्यधारा:—>

[इस धारा में कवि किसी काव्यांग का लक्षण न देकर केवल लक्ष्यकाव्य की रचना करता है, परन्तु उसके लक्ष्यकाव्य का आधार कोई काव्यांग लक्षण ही होता है। लक्षण का निर्माण न करने पर भी उसके काव्य मात्र से ही लक्षणसिद्ध हो जाता है, ऐसी काव्य धारा को रीतिसिद्ध काव्य धारा कहा गया है। बिहारी का काव्य इसका सबसे उत्तम उदाहरण है। इस प्रकार रीतिकाल में काव्य की ये तीनों धाराएं प्रचलित रहीं और सैकड़ों की संख्या में काव्य दृष्टि से उत्तम काव्यांगों का निर्माण हुआ।]

× ——— × ———

Date/20/01/2018

(3) रीतिकाल का प्रवर्तक किसे माना जा सकता है- केशव को या चिंतामणि को? अपना मत स्पष्ट कीजिए।

Answer [हिन्दी साहित्य में आज भी इस विवाद पूर्ण विषय का कोई सर्वसम्मत उत्तर नहीं बन पाया है कि रीतिकाल का प्रवर्तक किसे माना जाए। हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुसार जिस ग्रंथ में काव्य

हिन्द किया है। इसलिए इनको रीतिमुक्त काव्य कहागया है।]

इस धारा के ग्रंथों को भी तीन रूपों में देखा जाता है:—

(i) शृंगार ~~[illegible]~~ रसपरिपूर्ण मुक्तक:—

घनानन्द, बोधा, ठाकुर, आलम आदि कवियों ने काव्य शास्त्रीय आधार न लेकर भी शृंगारिक मुक्तकों की रीतिकाल के वातावरण के अनुकूल रचना की है। साथ ही उन्होंने इस वातावरण के प्रतिकूल रचना की है।

(ii) वीररसविषयक प्रबंध और मुक्तक रचनाएँ:—

इसकाल में ही लाल कवि, जोधराज, सूदन, चन्द्रशेखर आदि ने वीररसा-त्मक प्रबंध काव्य लिखे हैं तो भूषण ने राष्ट्रीय भावना से पूर्ण वीररस के मुक्तक रचे हैं।

(iii) नीति और भक्ति संबंधि मुक्तक:—

इसी काल में वृन्द, गिरधर, बैनी आदि ने नीति सम्बन्धि मुक्तक रचे हैं। तथा ध्रुवदास, नागरीदास, भगवंतसिंह, गुरुगोविन्द सिंह, आदि ने भक्ति सम्बन्धि मुक्तकों

(i) रसनिरूपक ग्रंथ :—

जिनमें सम्पूर्ण काव्यांगों का वर्णन न करके केवल विभिन्न रसों का लक्षण, लक्ष्य रूप में ही ग्रंथ किया गया है।

(ii) अलंकार निरूपक ग्रंथ :—

जिनमें अलंकारों के ही लक्षण-उदाहरण दिये गए हों।

(iii) विविध्द काव्यांगनिरूपक ग्रंथ :—

जिनमें काव्य के अनेक अंगों का उदाहरण सहीत लक्षण दीया गया हो।

इसकाल में चिंतामणी, मतिराम, देव, भिखारीदास, भूषण, पद्माकर आदि इसी धारा के कवि हुए हैं।

(2) रीतिमुक्त काव्यधारा :—

[रीतिमुक्त से तात्पर्य उन रचनाओं से है जिनकी रचना काव्य शास्त्र के नियमों के आधार पर न होकर केवल स्वांतः सुखाय रचना की गई है। इनमें से भी कुछ काव्य रीतिकाल के वातावरण के अनुकूल बन गया है। इस धारा के कवियों ने न तो कोई लक्षणग्रंथ ही लिखे हैं और न ही किसी के लक्षणों के आधार पर काव्य रचना करने का प्रयास

1) रीतिबद्ध काव्यधारा
2) रीतिमुक्त काव्यधारा
3) रीतिसिद्ध काव्यधारा

(1) रीतिबद्ध काव्यधारा :-

[इस काल में अधिकांश कवि ऐसे हुए हैं जिन्होंने लक्षणग्रंथ और लक्ष्यग्रंथ दोनों का एक साथ निर्माण किया है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में लक्षणग्रंथ की रचना केवल आचार्य करते थे। सिद्ध कवियों के काव्य ग्रंथों को देखकर वे काव्य के लक्षण निश्चित करते थे। और बाद के कवि इन्हीं लक्षणग्रंथों के आधार पर अपने काव्य-ग्रंथ रचते थे। लक्षणग्रंथ और लक्ष्यग्रंथ के रचयिता भिन्न-भिन्न होते थे।] इनके विरुद्ध हिन्दी के रीतिकाल में आचार्य और कवि का कार्य एक ही व्यक्ति ने किया है। एक ही कवि अपने ग्रंथ में विभिन्न काव्यांगों का लक्षण प्रस्तुत करके स्वयम् ही उसका लक्ष्य (अर्थात् उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के आचार्य या कवियों का रीतिबद्ध काव्यधारा में समावेश किया गया है। रीतिबद्ध काव्यधारा के ग्रन्थों को तीन खंडों में विभक्त किया जाता है ——